ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 07, Issue 01, 2018

कृषि औद्योगिकरण एवं ग्रामीण विकास का प्रतीक अध्ययन

(जनपद देवरिया के संदर्भ में)

डॉ० सत्यकीर्ति सिंह

प्रवक्ता भूगोल विभाग आदर्श सतेन्द्र महाविद्यालय माल लखनऊ उत्तर प्रदेश

शोध सारांश

भौगोलिक रूप से कृषि आधारित औद्योगिकीकरण ग्रामीण अर्थतंत्र को रूपांतरित करने का एक आधार है क्योंकि किसी भी पिछड़े अर्थतंत्र में कृषि विकास ग्रामीण विकास का धुरी माना माना जा सकता है। भौगों लक रूप में जब जनसंख्या प्राथमिक व्यवसायी में संलग्न रहती है और उसके आर्थिक कार्यों का उद्दरे य केवल जीवन निर्वाह रहता है। जैसे जैसे क्षेत्र विशेष में जनसंख्या बढ़ती है। कृषि उत्पादन प्रक्रिया में भी मात्रात्मक एवं गुणात्मक परिवर्तन होते हैं। विभिन्न तकनीकों, अविष्कारों, नवाचारों के प्रसार आदि कारणों से कृषि साधनों के माध्यमों से जितना अधिक संपर्क स्थापित होगा वे केंद्र क्षेत्रीय अर्थतन्त्र पर उतना ही अधिक प्रभावी होगा। इस प्रकार किसी भी क ष प्रधान अर्थतंत्र वाले क्षेत्र में ऐसे केंद्र कृषि सम्बन्धी द्वितीयक तृतीयक कार्यों अथवा कृषि उद्योगों को भी अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं।

कालान्तर में ये सभी केंद्र विकसित होकर अर्थतंत्र के नियंत्रक केंद्र बन जाते हैं। इसके साथ ही परिवहन संचार के साधनों के माध्यम से क्षेत्रीय अर्थतंत्र पर इनका प्रभाव पड़ता है। जिससे इन केंद्रों पर एकत्रित बहुत से आर्थिक कार्यों का समीपवर्ती छोटे-छोटे केंद्र एक तो अपना स्वतंत्र क्षैतिज प्रभाव क्षेत्र रखते हैं, तो दूसरी ओर आपस में प्रणालियों, शस्य प्रजातियों और कृषि तंत्र प्रगतिशील अर्थ तंत्र अथवा अपने से बड़े से ऊर्धवाधर संपर्क रखते हैं। इस प्रक्रिया के रूप में परिवर्तित होने लगता है। इसी के साथ ही साथ एअर्थ से भू वैन्यासिक संगठन का विकास होता है। जिससे कृषि तंत्र के दुसरे संभावित प्रखडं जैसे उद्योग, अवस्थापना तत्त्व के आधारित अर्थतंत्र में गतिशीलता आती है, और शस्य प्रतिरूप में साथ साथ परिवहन और संचार विकसित होने लगते हैं तो उसी के अनुसार कृषि अर्थ तंत्र भी परिवर्तित होने लगते हैं और कृषि परिवर्तन, औद्योगिक फसलों की कृषि उसी के अनुसार, कृषि सम्बन्धी अवस्थापना तत्वों का विकास और प्रचार आदि उत्पादन में वृरि होने लगती है, तथा क्षेत्र विशेष में कृषि पर कारणों से कृषि का व्यवसायीकरण प्रारम्भ होता है, तथा कृषि आधारित जनसंख्या की आय में वृ िहोती है। परिणाम स्वरुप ग्रामीण क्षेत्रों में पूँजी निर्माण होने लगता है। इसके अतिरिक्त पूँजी का उपयोग, ग्रामीण जनसंख्या, कृषि

कार्य के अतिरिक्त अन्य कार्यों में करने लगती है जिससे कृषि के साथ साथ अन्य प्रखंड में भी विकास होने लगता है। इस प्रकार क्षेत्र विशेष कृषि पैर आधारित संभावनाओं से युक्त एक ऐसा क्षेत्र बन जाता है, जहाँ द्वितीयक और तृतीया कार्यों का तेजी से विकास होने लगता है।

गोलिक रूप में क्षेत्र में ऐसे सभी कार्य विन्दुवत अवस्थिति वाले होते हैं, क्योंकि ये कार्य किसी ऐसे केंद्र पैर विकसित होते हैं जिनका ऊर्धवाधर और क्षैतिज संपर्क विकसित हाने का अवसर प्रदान करता है। ऐसे ही केंद्र कृषि आधारित अर्थतंत्र में कृषि औद्योगीकरण को विकसित करने में सहायक बनते हैं। पदानुक्रमिक रूप में इन केंद्रों में कुछ केंद्र बहुत अधिक उपुक्तस्थिति वाले रहते हैं, जो अन्य केंद्रों की अपेक्षा वे विभिन्न कार्यों के साथ कृषि उद्योगों को भी अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। जिससे क्षेत्र विशेष में इस प्रकार के केंद्र फसलों पर आधारित अनेक प्रकार के उद्योग स्थापित होने लगते हैं इस तरह क्षेत्र विशेष में कृषि पर आधारित अनेक औद्योगिक केन्द्रों का एक भू-वैन्यासिक तंत्र विकसित हो जाता है। जिसका कार्यात्मक सम्बन्ध क्षेत्रीय और ग्रामीण जनसँख्या से रहता है। परिणाम स्वरुप औद्दोगिक केन्द्रों में जैसे जैसे कृषि आधारित केन्द्रों का विकास होता है। उसी के अनुसार कृषि में भी रूपांतरण होने लगता है। स्थानीय औद्योगिक केन्द्रों में अतिरिक्त कृषि उत्पादनों की खपत होती है। जिससे किसानों को उनके उत्पादन का तुरंत मूल्य मिलता है, और प्रतिरूपर्धात्मक स्थिति के कारण किसान अधिक मूल्यवान फसलों को बोन लगते हैं। इस प्रकार क्षेत्र विशेष में कृषि औद्योगीकरण की प्रक्रिया का विकास होता है।

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र जनपद देवरिया में कृषि उद्योगों के विकास और उनके क्षेत्रीय प्रतिरूप का विश्लेषण पूर्व अध्यायों में किया जा चुका है। उससे स्पष्ट होता है कि यहाँ कृषि उद्योगों का क्षेत्रीय विकास प्रतिरूप विभिन्न औद्दोगिक केन्द्रों के सन्दर्भ में ही अधिक हुआ है। संभवतः इसका कारण विभिन्न अर्थ तंत्र के नियत्रंण के विन्दु के रूप में विकसित होते हैं।

औद्योगिक केन्द्रों पर पहले से ही उपलब्ध औद्योगिक कालांतर में इन केंद्रों का ग्रामीण क्षेत्र से परिवहन और संचार अवस्थापना तत्वों, कृषि अवस्थापना तत्वों, बैंक, परिवहन, एवं संचार प्रशासनिक संस्थाओं का केंद्रीयकारण है। इसीलिये किसी नए क्षेत्र में कृषि सम्बन्धी उद्योगों की स्थापना पहले से विकसित औद्योगिक केन्द्रों पर ही की गयी है। यही कारण है की अध्ययन क्षेत्र के देवरिया सदर, बरहज, सलेमपुर, रुद्रपुर, रामपुर कारखाना आदि विकास खण्डों में गैर कृषि उद्योगों के साथ साथ कृषि उद्योगों का भी विकास हुआ है। कालांतर में परिवहन एवं संचार सुविधाओं के विकास के कारण इन क्षेत्रों से दूर गौरीबाजार,

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 07, Issue 01, 2018

लार, भाटपाररानी, भागलपुर आदि में भी कृषि सम्बन्धी उद्योगों का विकास हुआ है। यह भी उल्लेखनीय है की जैसे जैसे कृषि सम्बन्धी उद्योगों का क्षेत्रीय बिखराव हुआ. उसी के अनुसार औद्योगिक केन्द्रों पर अवस्थापनात्मक, सामाजिक और संस्थागत सुविधाओं का भी विकास हुआ। इससे उन केन्द्रों के निकट ग्रामीण विकास भी प्रभावित हुआ।

यही कारण है की जनपद देवरिया में कृषि आधारित उद्योगों का भू-वैन्यासिक तंत्र जहाँ तक विकसित है, ग्रामीण विकास का उच्च स्तर उन क्षेत्रों में मिलता है।

भौगोलिक रूप में कृषि पर आश्रित पिछडे अर्थतन्त्र में कृषि का आधुनिकीकरण अर्थ तंत्र को विकसित कर सकता है। जनपद देवरिया के सन्दर्भ में यह तथ्य स्पस्ट हुआ है की परंपरागत रूप में यहाँ गन्ना एवं तिलहन ही व्यावसायिक फसल रही हैं। जिससे यहाँ इनसे सम्बंधित उद्योगों का विकास हुआ, लेकिन धीरे-धीरे जब विभिन्न केन्द्रों पर औद्योगिक अवस्थापना तत्वों का विकास हुआ तो उसी के अनुरूप कृषि प्रतिरूप में परिवर्तन हुआ है। इसी का परिणाम यह रहा कि क्षेत्र में व्यावसायिक कृषि के क्षेत्र में वृरि हो रही है, क्योंकि इन फसलों से सम्बंधित उद्दोग विभिन्न केन्द्रों में स्थापित हो रहे हैं। सामान्यतः इन केन्द्रों द्वारा स्थानीय कृषि संसाधनों पर आधारित उद्योगों का विकास, विभिन्न उद्योगों में स्थानीय रोजगार कि सुविधा और दूसरी ओर कृषि उत्पादनों कि स्थानीय उद्योगों में सम्मिलित किये जा सकते हैं।

1. स्थानिक पुनर्गठन
2. सामाजिक पुनर्गठन
3. संस्थागत पुनर्गठन
4. प्रशासनिक पुनर्गठन

ग्रामीण विकास के उपर्युक्त चारों घटक पारस्परिक रूप में अन्तर्सम्बन्धित होते हैं, क्योंकि किसी क्षेत्र में यदि किसी घटक का पुनर्गठन होता है तो दुसरे घटकों का भी पुनर्गठन संभव है। भौगोलिक रूप में इन घटकों के पुनर्गठन के लिए सम्बंधित क्षेत्र में अर्थतंत्र का रूपांतरण, उसकी पारिस्थितिकीय विशेषताएं, जनसंख्या और अधिवासों का वितरण, परिवहन तथा संचार साधनों का प्रसार आदि तथ्यों की आवश्यकता होती है। अध्ययन क्षेत्र जनपद देवरिया में पारिस्थितिकीय दृष्टिकोण से दोमट मिट्टी जैसी उर्वर मिट्टी का होना, उपयुक्त वर्षा, परम्परागत रूप से सिंचाई साधनों का विकास, अपेक्षाकृत जनसंख्या का सघन वितरण, महत्वपूर्ण संसाधन रहे हैं, इनके आधार पर क्षेत्र में परिवहन मार्गों का विकास, अध्ययन क्षेत्र

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

से राष्ट्रीय मार्ग8 का गुजरना और जनपद देवरिया से पहले से ही देशी रियासतों के प्रशासनिक केन्द्रों का होना भू-वैन्यासिक तंत्र के लिए सहायक रहे हैं। यहाँ देशी रियासतों के प्रशासनिक केन्द्रों पर पहले से ही स्थापित सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक सुविधाओं और कालान्तर में परिवहन मार्गों के विकास के कारण जनपद देवरिया में आर्थिक, सामाजिक, प्रशासनिक, पुनर्गठन हुए हैं। क्षेत्र में देवरिया सदर, रामपुर कारखाना, सलेमपुर, रूद्रपुर जैसे विकासखंडों में प्राचीन रियासतों के सांस्कृतिक केंद्र रहे हैं, जहाँ सामाजिक, आर्थिक सुविधाओं का केन्द्रीयकरण भी रहा है। कालान्तर में ये केंद्र विभिन्न प्रकार के परिवहन मार्गों से जब जुड़ गए तो क्षेत्रीय सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तंत्र के विकास में सहायक बताये गए। यही कारण खपत के कारण इनका कार्यात्मक अन्तर्सम्बन्ध बढ़ा है, जिससे है की इन केन्द्रों से सम्बंधित क्षत्रों में ही ग्रामीण विकास का उच्च कृषि सम्बंधित उद्योगों के विकास में तेजी आयी है।

ग्रामीण विकास

भौगोलिक रूप में किसी क्षेत्र विशेष में ग्रामीण विकास की प्रक्रिया एक बहुत ही जटिल प्रक्रिया है। जिसमें ग्रामीण सामाजिक, आर्थिक और संस्थागत तंत्र रूपान्तरित होता है। इस प्रक्रिया में कृषि आधारित औद्योगिक तंत्र का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है, क्योंकि ऐसे औद्योगिक केंद्र ग्रामीण क्षेत्रों में अर्थतन्त्र का परिचालन करते हैं। इसके साथ ही ये केंद्र विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधिओं के भी केंद्र बन जाते हैं। जो प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में ग्रामीण विकास को प्रोत्साहित करते हैं। सामान्यतया ग्रामीण विकास के अंतर्गत निम्न घटक एवं मध्यम स्तरीय प्रतिरूप मिलता है। जबकि दक्षिण पूर्व, उत्तर एवं उत्तर पूर्व तथा दक्षिण मध्य आदि में ग्रामीण विकास का निम्न स्तरीय प्रतिरूप मिलता है, क्योंकि इन क्षेत्रों में सामाजिक आर्थिक तंत्र का पुनर्गठन नहीं हो सका। प्रस्तुत अध्ययन के सन्दर्भमें विभिन्न घटकों के पुनर्गठन से सम्बंधित कई चरों को लेकर उनके समन्वित मूल्यों के आधार पर ग्रामीण विकास स्तर का निर्धारण करके ग्रामीण विकास के क्षेत्रीय प्रतिरूप को पहचाना गया है। जिसके अनुसार ग्रामीण विकास के क्षेत्रीय प्रतिरूप को पहचाना गया है। जिसके अनुसार ग्रामीण विकास का उच्च स्तरीय प्रतिरूप देवरिया सदर, सलेमपुर, भाटपार रानी, रामपुर कारखाना में है। जबकि इसके चारो ओर ग्रामीण विकास के मध्यम और निम्न स्तरीय प्रतिरूप मिलते हैं।

IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 07, Issue 01, 2018

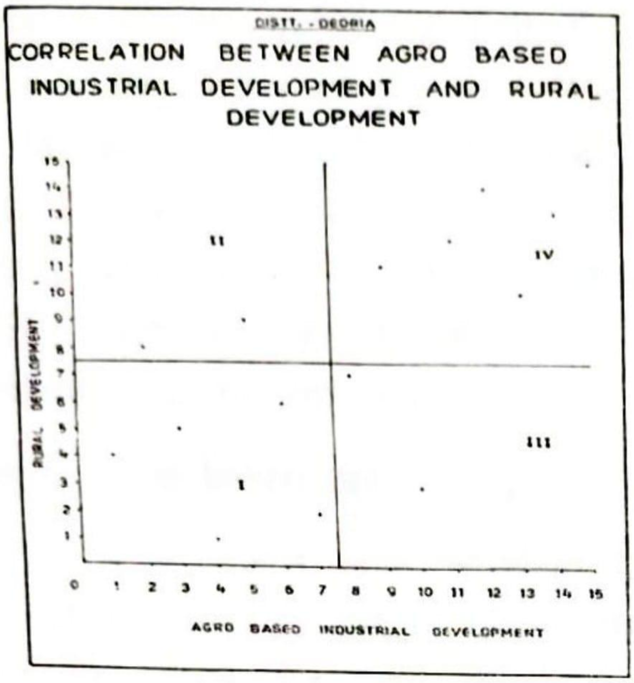

कृषि औद्योगीकरण और ग्रामीण विकास का अन्तर्सम्बन्ध

भौगोलिक रूप में अध्ययन क्षेत्र जनपद देवरिया के सन्दर्भ में कृषि औद्योगीकरण और ग्रामीण विकास का अन्तर्सम्बन्ध का विश्लेषण दोनों चरों में कोटि सह सम्बन्ध गुणांक की गणना करके किया गया है। इसके अनुसार कृषि औद्योगीकरण और ग्रामीण विकास स्तर में धनात्मक सह सम्बन्ध 19.84 है, जो मध्यम स्तरीय सहसम्बन्ध से अधिक है। यह स्पष्ट कर रहा है कि कृषि औद्योगीकरण और ग्रामीण विकास मे एक सीमा तक निर्धारक चर का कार्य कर रहा है। लेकिन पूर्णतया कृषि औद्योगीकरण पर ही ग्रामीण विकास निर्भर नहीं है। क्षेत्रीय आधार पर सहः सम्बन्ध के प्रतिरूप को व्यक्त करने के लिए प्रकीर्णन आरेख कि रचना कि गयी है। जिससे दोनों चरों में सह सम्बन्ध के क्षेत्रीय प्रतिरूप का ज्ञान होता है। चित्र संख्या1द्ध

1प्रथम वर्ग के विकास खंड

इस वर्ग में देवरिया सदर रामपुर कारखाना गौरीबाजार सलेमपुर और भाटपार रानी विकास खंड सम्मिलित हैं। इनमें कृषि औद्यागीकरण और ग्गा मीण विकास दाने उच्च स्तर का है।

यह पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है कि अध्ययन क्षेत्र में देवरिया सदर सलेमपुर रामपुर कारखाना स्वतंत्रता पूर्व काल से ही विभिन्न उद्योगों के केन्द्र रहे हैं। इसके साथ ही

विभिन्न देशी रियासतों के प्रशासनिक केंद्र भी इन्ही केन्द्रों में रहे हैं। कालान्तर में परिवहन मार्गों के विकास के परिणाम स्वरुप इन विकास खण्डों के विभिन्न केन्द्र अनेक प्रकार के उद्योगों के केन्द्र बनते गए। यही प्रवृत्ति कृषि उद्योगों के स्थानीयकरण में भी सहायक रही हैं। इसीलिये इन विकासखंडों में ग्रामीण विकास और औद्योगीकरण दोनों उच्च स्तर का है।

2. द्वितीय वर्ग के विकास खंड

इस वर्ग में अध्ययन छेत्र के दो विकास खंड बरहज एवं रुद्रपुर सम्मिलित हैं। इसमें कृषि औद्योगीकरण का उच्च स्तर मिलता है। जबकि ग्रामीण विकास का निम्न स्तर मिलता है।..

भौगोलिक रूप में इन विकास खण्डों में औद्योगिक अवस्थापना तत्वों का केन्द्रीयकरण रहा है। इसके साथ ही देशी रियासतों के प्रशासनिक केन्द्र भी रहे हैं। इसके अतिरिक्त सड़क सुविधाओं के कारण देवरिया के औद्योगिक संकेन्द्रण का बिखराव बरहज की ओर रहा है। जबकि दक्षिण में रुद्रपुर गेहूं एवं गन्ना उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण है।

3. तृतीया वर्ग के विकास खंड

इस वर्ग में दो विकास खंड सम्मिलित हैं भटनी और भागलपुर। भटनी अध्ययन क्षेत्र के पूर्वी भाग में स्थित है जबकि भागलपुर दक्षिणी भाग में। इन विकास खण्डों में कृषि आधारित उद्योगों का विकास औसत से काम हुआ है, जबकि ग्रामीण विभाग का विकास औसत से ज्यादा। ग्रामीण विकास उच्च स्तरीय होने का कारण परिवहन सुविधाओं का समुचित विकसित होना है। इसके साथ ही सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और स्वस्थ्य सम्बन्धी सेवाओं का विकास हुआ है। भटनी इस क्षेत्र का प्रमुख रेलवे जंक्शन भी है। जबकि भागलपुर और भटनी में देवरिया जनपद के अन्यक्षेत्रों से सरक संपर्क पर्याप्त रूप में विकसित है। इसलिए ग्रामीण विकास को प्राते साहन मिला है। दोनों विकास खण्डों में कृषि आधारित उद्योगों के अधिक विकसित न होने के कारण कृषि पर आधारित औद्योगिक संसाधानों का आभाव है क्योंकि औद्योगिक फसलों के लिए यहाँ अवस्थापना तत्वों का अभाव है।

4. चतुर्थ वर्ग के विकास खंड

इस वर्ग में वे विकास खण्ड सम्मिलित हैं जो कृषि औद्योगीकरण एवं ग्रामीण विकास दोनों में निम्न स्तर रखते हैं। इसमें देसाई देवरिया, भलुअनी, बैतालपुर, लार, पथरदेवा और बनकटा विकास खण्ड सम्मिलित हैं। यहाँ सिचाई संसाधनों का अभाव है। इसलिए कृषि प्रतिरूप के अंतर्गत औद्योगिक संभावना वाली फसलें यहाँ सीमित मात्रा में पैदा की जाती हैं,

जिससे उद्योगों का भी काम विकास हुआ है। परिणाम स्वरुप यहाँ कृषि उद्योगों का अभाव तथा ग्रामीण विकास का निम्न स्तर मिलता है। वैसे इन विकास खंडो में परिवहन संचार साधनों का विकास भी काम हुआ है। जिससे सामाजिक तथा शैक्षिक अवस्थापना तत्वों की भी कमी है।

इसी प्रकार विकास और कृषि आधारित औद्योगिक विकास के पारस्परिक अन्तर्सम्बन्ध का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है की अध्ययन क्षेत्र जनपद देवरिया में पहले से ही केन्द्रीकरण इन नोडल केन्द्रों पर होता गया, जो बाद में चलकर ग्रामीण विकास और कृषि औद्योगीकरण में सहायक बना। भौगोलिक रूप से देवरिया सदर, रामपुर कारखाना, सलेमपुर आदि बरहज के प्रभाव क्षेत्रों में स्थित अन्य विकास खण्डों में स्थापित विकास केन्द्रों देवरिया, रामपुर कारखाना रुद्रपुर, भी ग्रामीण विकास आरै कृषि औद्योगीकरण संभव हुआ है। इस सलेमपुर, बरहज में परवर्ती काल में भी ग्रामीण विकास तथा कृषि आधारित उद्दोगों का विकास उच्च स्तर का रहा है। इन केन्द्रों की केन्द्रीयता और यहाँ मिलने वाली अवस्थापना सुविधाओं ने विकास के विभिन्न घटकों को अपनी ओर आकर्षित किया है। यहाँ पहले से बानी औद्योगिक संरचना ने कालान्तर में कृषि सम्बन्धी उद्दोगों को भी आकर्षित किया है।

विशेष रूप से प्रशासनिक सुवधाओं के कारण भी कृषि सम्बंधित उद्योगों का केन्द्रीयकरण इन्ही विकासखंडों में हुआ है। कालान्तर में सड़क मार्ग का विकास और शस्य प्रतिरूप में परिवर्तन होने लगा। इन केन्द्रों से कृषि सम्बन्धित उद्योगों का बिखराव सड़क मार्गों के नोडल केन्द्रों पर हुआ है। जिससे स्थानीय कृषि संसाधनों की खपत, अवस्थापना तत्वों का तरह स्पष्ट होता है की जनपद देवरिया में कृषि औद्योगीकरण तथा ग्रामीण विकास दोनों केंद्रीय स्थिति वाले रहे हैं। कालान्तर में विकसित केन्द्रों से प्रचार प्रसार के कारण समीपवर्ती भागों में ग्रामीण विकास के विभिन्न घटकों और कृषि आधारित उद्योगों का बिखराव हुआ है।

यह भी उल्लेखनीय है कि इन केन्द्रों से विकासात्मक प्रवृत्तियों का प्रसार विन्दुवत रूप में ही हुआ है। इन नए विकसित केन्द्रों के उनके प्रभाव क्षेत्र से कार्यात्मक अन्तर्सम्बन्ध होने के कारण कृषि अर्थतंत्र में रूपांतरण प्रोत्साहित हुआ है। इसके साथ ही साथ ग्रामीण विकास के विभिन्न घटकों का भी विकास इन्न केन्द्रों पर हुआ है। इन सबका सम्मिलित प्रभाव कृषि औद्योगीकरण और ग्रामीण विकास पर पड़ा है।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

REFERENCES

1) Shah, Anita (1986), Rural

Industrialization in Gujrat. Indian Journal of Regional Science, Vol XVIII, No. 1.

2) Papola TS (1980), Rural Industrialization in Uttar Pradesh, The non household Sector, Technical report

no 5. Giri Institute of Development studies.

3) Hirway Indina and Shah Anita (1984), Poverty evodication and the scheme for khadi and village Industries an examination. Report submitted to

Gujrat Khadi and Gramodyog Department.

4) Rang Rajan (1983), Agricultural grow and Industrial performance in India. study in Institute of Management Lucknow.